क्षणिकाएं

शब्दों का सागर

‘मूक’ शब्द भी..

‘भाव’ भरे सीख दे,

शब्द भँवर खेल ऐसा।

घरौंदा

तिनकों, फूलों से,

खुशियाँ, हसरतों भरा,

सपना नहीं, एक सोच ।

इठलाना

मंथन उसी का,

ब्रह्मांड है समाए,

ऐसी ‘दरिया’ दिली।

समझ

‘क्षण’ अनुभूति,

परम ज्ञान, सुख,

है मूल मंत्र ।

हकीकत

बिखरे मोती,

पिरोए स्वयं ही,

यूं ही खुशियां।

दस्तूर

प्रकृति से ‘खेला’

होगा आपदा भरा,

है नियम ‘ऋतु’ ।

गीतांजलि सक्सेना 2023